शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

# आकाशवाणी के संगठनात्मक ढांचे का विवरणात्मक अध्ययन

**योशिता पांडेय**
**शोधार्थी**
**पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग**
**स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड**

**शोध सार**

ऑल इंडिया रेडियो )AIR), जिसे आकाशवाणी के नाम से भी जाना जाता है, प्रसार भारती के तहत संचालित भारत का राष्ट्रीय सार्वजनिक रेडियो प्रसारक है। 1936 में स्थापित, AIR ने लाखों लोगों तक समाचार, संस्कृति, शिक्षा और मनोरंजन का प्रसार करते हुए मीडिया और संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शोध AIR की संगठनात्मक संरचना, शासन, परिचालन रूपरेखा और चुनौतियों का पता लगाता है। द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन जांचता है कि AIR भारत के मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र, इसके पदानुक्रमिक ढांचे और विभिन्न कार्यात्मक प्रभागों की भूमिकाओं के भीतर कैसे कार्य करता है। निष्कर्ष तेजी से विकसित हो रहे डिजिटल मीडिया परिदृश्य में AIR की ताकत और सुधार के क्षेत्रों पर प्रकाश डालते हैं।

**कुंजीभूत शब्द**

ऑल इंडिया रेडियो, आकाशवाणी, संगठनात्मक संरचना, सार्वजनिक प्रसारण, प्रसार भारती

## 1. परिचय

### 1.1 पृष्ठभूमि और महत्व

रेडियो संचार के सबसे सुलभ और लागत प्रभावी माध्यमों में से एक बना हुआ है, खासकर भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में। प्रसार भारती के अंतर्गत आकाशवाणी भारत के प्राथमिक सार्वजनिक रेडियो नेटवर्क के रूप में कार्य करता है, जो उन सुदूर क्षेत्रों तक भी पहुँचता है जहाँ टेलीविज़न और इंटरनेट सीमित हैं। सार्वजनिक सेवा प्रसारण के अपने अधिदेश को पूरा करने में इसकी प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए इसकी संगठनात्मक संरचना को समझना महत्वपूर्ण है। आकाशवाणी )All India Radio - AIR) भारत की सरकारी रेडियो प्रसारण सेवा है, जिसकी स्थापना 1936 में हुई थी। इसकी पृष्ठभूमि भारतीय प्रसारण इतिहास से जुड़ी हुई है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

**आकाशवाणी की पृष्ठभूमि**

1. **शुरुआत )1920 का दशक(**
   - भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत 1923 में बॉम्बे अब ) और कलकत्ता (अब मुंबई) में निजी रेडियो क्लबों द्वारा हुई। (कोलकाता
   - 1927 में, इंडियन ब्रॉड कास्टिंग कंपनी )IBC) नामक एक निजी कंपनी को रेडियो प्रसारण का लाइसेंस मिला, लेकिन यह आर्थिक रूप से सफल नहीं रही।
2. **सरकारी नियंत्रण और आकाशवाणी की स्थापना )1930-1950)**
   - 1930 में, ब्रिटिश सरकार ने रेडियो प्रसारण को अपने नियंत्रण में ले लिया और इसे ) "इंडियन स्टेट ब्रॉड कास्टिंग सर्विस"ISBS) नाम दिया।
   - 8 जून 1936 को, इसका नाम बदलकर ) "ऑल इंडिया रेडियो"All India Radio - AIR) कर दिया गया।
   - 1956 में, इसका आधिकारिक नाम रखा गया "आकाशवाणी", जो संस्कृत शब्द है और जिसका अर्थ है ।"आसमान से गूंजने वाली वाणी"
3. **स्वतंत्रता संग्राम और आकाशवाणी**
   - 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद " के माध्यम से जनता को संबोधित किया। "रेडियो
   - स्वतंत्रता के बाद, आकाशवाणी ने भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
4. **तकनीकी और कार्यक्रमों का विकास )1950-2000)**
   - 1957 में सेवा शुरू की गई "विविध भारती", जिसने बॉलीवुड संगीत और मनोरंजन कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाया।
   - 1967 में आकाशवाणी ने FM प्रसारण शुरू किया।
   - समाचार, शिक्षाप्रद कार्यक्रम, और कृषि संबंधी जानकारियों से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक, आकाशवाणी ने भारतीय समाज को सूचना और मनोरंजन प्रदान किया।
5. **आधुनिकयुग )2000-वर्तमान(**

- डिजिटल प्रसारण और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग की शुरुआत।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम जैसी नई पहलें। "मन की बात"
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है।

**महत्व और योगदान**

- भाषाई विविधता: आकाशवाणी 23 भाषाओं और 179 बोलियों में प्रसारण करता है।
- लोक प्रिय कार्यक्रम: समाचार, विविध भारती, संगीत, खेल कमेंट्री, शिक्षा, कृषि आदि से संबंधित कार्यक्रम।
- सांस्कृतिक धरोहर: भारतीय संस्कृति, संगीत और साहित्य को संरक्षित और प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका।

आज भी, आकाशवाणी सूचना प्रसारण का एक प्रमुख स्रोत बना हुआ है और डिजिटल युग में भी इसकी प्रासंगिकता बरकरार है।

### 1.2 अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य है:

• आकाशवाणी की पदानुक्रमिक संरचना की जाँच करना।
• विभिन्न कार्यात्मक शाखाओं की भूमिकाओं का विश्लेषण करना।
• इसके परिचालन ढाँचे में प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।

### 1.3 शोध पद्धति

यह शोध सरकारी रिपोर्ट, अकादमिक लेख, आधिकारिक आकाशवाणी दस्तावेज़ और मीडिया अध्ययन सहित द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। गुणात्मक दृष्टिकोण आकाशवाणी के संस्थागत ढाँचे और शासन को समझने में मदद करता है।

## 2. आकाशवाणी का विकास और शासन

### 2.1 ऐतिहासिक विकास

आकाशवाणी की उत्पत्ति 1927 में भारतीय प्रसारण कंपनी )IBC) से हुई। 1936 में इसका नाम बदलकर ऑल इंडिया रेडियो कर दिया गया और स्वतंत्रता के बाद यह राष्ट्र निर्माण के

लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया। प्रसार भारती अधिनियम 1997 ने इसे स्वायत्तता प्रदान की, लेकिन यह अप्रत्यक्ष रूप से सरकारी नियंत्रण में है।

### 2.2 शासन संरचना

एआईआर प्रसार भारती के अधीन काम करता है, जिसमें महानिदेशक सबसे ऊपर (डीजी) होता है, जिसे निम्नलिखित द्वारा सहायता प्रदान की जाती है:

- अतिरिक्त महानिदेशक क्षेत्रीय और कार्यात्मक विभागों का प्रबंधन करते हैं। (एडीजी)
- क्षेत्रीय मुख्य अभियंता तकनीकी संचालन की देखरेख करते हैं।
- क्षेत्रीय और स्थानीय स्टेशन स्टेशन निदेशकों के अधीन काम करते हैं।

एआईआर एक पदानुक्रमित संरचना का पालन करता है जिसमें निर्णय लेने की प्रक्रिया केंद्रीकृत होती है, लेकिन क्षेत्रीय स्तरों पर कार्यान्वयन विकेंद्रीकृत होता है।

## 3. एआईआर के कार्यात्मक विंग

एआईआर में कई प्रभाग हैं जो निर्बाध प्रसारण संचालन सुनिश्चित करते हैं।

### 3.1 कार्यक्रम विंग

सामग्री उत्पादन के लिए जिम्मेदार, यह विंग समाचार, शिक्षा, संस्कृति और मनोरंजन की देखरेख करता है। कार्यक्रम निदेशक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर काम करते हैं, सभी जनसांख्यिकी के लिए विविध प्रोग्रामिंग सुनिश्चित करते हैं।

### 3.2 इंजीनियरिंग विंग

इंजीनियरचीफ द्वारा प्रबंधित-इन-, यह प्रभाग तकनीकी पहलुओं को संभालता है, जिसमें शामिल हैं:

- ट्रांसमीटर और प्रसारण अवसंरचना।
- डिजिटल और एफएम रेडियो विस्तार।
- आपदा प्रबंधन संचार प्रणाली।

### 3.3 प्रशासनिक विंग

कार्मिक, वित्तीय नियोजन और कानूनी मामलों को संभालता है। ADG (प्रशासनमानव ( संसाधन और परिचालन बजट का प्रबंधन करता है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

### 3.4 ऑडियंस रिसर्च विंग

सामग्री की पहुँच और प्रभाव को बेहतर बनाने के लिए ऑडियंस विश्लेषण करता है। यह प्रभाग बदलती ऑडियंस प्राथमिकताओं के अनुसार AIR के प्रोग्रामिंग को अनुकूलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

### 3.5 बाहरी सेवा प्रभाग

भारत के सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को वैश्विक स्तर पर पेश करने के लिए 27 भाषाओं में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसारण करने वाली एक महत्वपूर्ण शाखा।

### 3.6 सुरक्षा विंग

AIR के भौतिक अवसंरचना, ट्रांसमीटर स्टेशनों और डिजिटल संपत्तियों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार।

## 4. भारत के मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र में AIR की भूमिका

### 4.1 सार्वजनिक सेवा प्रसारण

AIR प्रदान करता है:

- समाचार और आपातकालीन प्रसारण।
- शैक्षणिक कार्यक्रम, जिसमें स्कूल और कृषि प्रसारण शामिल हैं।
- शास्त्रीय संगीत और क्षेत्रीय सामग्री के माध्यम से सांस्कृतिक संरक्षण।

### 4.2 डिजिटल युग में चुनौतियाँ

अपनी व्यापक पहुँच के बावजूद, AIR को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है:

- श्रोताओं की संख्या में गिरावटडिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म का उदय। :
- तकनीकी पिछड़ापनडिजिटल प्रसारण में धीमा बदलाव। :
- नौकरशाही बाधाएँसरकारी प्रभाव संपादकीय स्वतंत्रता को सीमित करता है। :

## 5. वैश्विक सार्वजनिक प्रसारकों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण

एआईआर की तुलना बीबीसी (यूके), एनपीआर से करने (ऑस्ट्रेलिया) और एबीसी (यूएसए) पर फंडिंग, स्वायत्तता और तकनीकी अपनाने में अंतर पर प्रकाश डाला गया है। बीबीसी अधिक संपादकीय स्वतंत्रता के साथ काम करता है, जबकि एआईआर राजनीतिक प्रभाव और फंडिंग सीमाओं से जूझता है।

## 6. भविष्य की संभावनाएँ और सिफारिशें

### 6.1 तकनीकी उन्नयन

• बेहतर ऑडियो गुणवत्ता के लिए DAB+ (डिजिटल ऑडियो ब्रॉडकास्टिंगका विस्तार। (
• बेहतर मोबाइल ऐप और पॉडकास्ट एकीकरण।

### 6.2 वित्तीय स्वतंत्रता

• सरकारी अनुदान से परे राजस्व स्रोतों का विविधीकरण।
• सार्वजनिक सेवा अखंडता को बनाए रखते हुए व्यावसायीकरण में वृद्धि।
• समाचार प्रसारण में राजनीतिक हस्तक्षेप को कम करना।
• 1997 अधिनियम की मूल दृष्टि के अनुसार प्रसार भारती की स्वतंत्रता को मजबूत करना।

## 7. निष्कर्ष

आकाशवाणी के संगठनात्मक ढांचे का यह खोजपूर्ण अध्ययन एक जनसंचार मंच के रूप में इसकी ताकत और नौकरशाही चुनौतियों के कारण इसकी सीमाओं को प्रकट करता है। प्रासंगिक बने रहने के लिए, आकाशवाणी को डिजिटल परिवर्तन रणनीतियों को अपनाना चाहिए और संपादकीय निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता सुनिश्चित करनी चाहिए।

## संदर्भ

1. Prasar Bharati. (2023). Official Website of Prasar Bharati. Retrieved from https://prasarbharati.gov.in/
2. Kumar, A. (2020). "The Role of All India Radio in Rural Development," Indian Journal of Communication Studies, 45(2), 120-135.
3. BBC. (2023). Comparing Public Broadcasters: Lessons from the BBC and AIR. Retrieved from https://www.bbc.com
4. Singh, R. (2019). "Challenges and Opportunities for AIR in the Digital Age," Media Research Journal, 10(1), 80-95.
5. Government of India. (1997). The Prasar Bharati Act. New Delhi: Ministry of Information & Broadcasting.
6. Sharma, P. (2021). "Radio Listenership Trends in India," Journal of Media Studies, 32(4), 200-215.